हिंदी सिनेमा में समाज-दर्शन
(विशेष संदर्भ मदर इंडिया फिल्म)

Dr. Jashbir Singh S/O Kartar Chand, Address: 142 Tej Colony, Tehsil Camp, Panipat-132103 (Haryana-India)

भारतीय देश विविधताओं में एकता सांस्कृतिक विरासत वाला देश है। भारत देश में अनेकों भाषाओं और बोलियों का इतिहास चिरकाल से उत्तर-आधुनिकता की ओर अग्रसर है। ये भाषाएँ-बोलियाँ अपने अंचल-क्षेत्र के जनजीवन को दर्शाती है तथा उनके मूल्यांकन के लिए आधार भी प्रस्तुत करती हैं। इन बोलियों को जीवित रखने के लिए फिल्मों का निर्माण किया गया जिसमें भारतीय जनजीवन में समाज-दर्शन को स्थान दिया गया। भारत देश वैदिक, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश (पुरानी हिंदी) शौरसैनी अपभ्रंश, पश्चिमी हिंदी और फिर खड़ी बोली का निर्माण भारत देश के दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, सहारनपुर, कन्नौज, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि राज्यों तक अपना प्रभाव छोड़ा। हिंदी यूं तो हिंदी क्षेत्र की भाषा रूप में विद्यमान है परन्तु इसका विस्तार कश्मीर-से-कन्याकुमारी तथा गुजरात से असम तक है। इसका प्रभाव देखते हुए हिंदी फिल्म जगत में हिंदी महत्व बढ़ा। फ़िल्मी जगत में हिंदी भाषा और खड़ी-बोली एक वरदान रूप में सिद्ध हुई और भारत देश में अनेकों, सर्वाधिक, प्रभावशाली और तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी फिल्मों से सबसे अधिक ख्याति भी प्राप्त की। हिंदी फिल्मी जगत में 'मदर इंडिया' फिल्म ने सामाजिक दर्शन के क्षेत्र पर खूब प्रभाव छोड़ा ।

समाज दर्शन, सामाजिक-जीवन के समस्त पहलुओं से होकर गुजरने वाला दृश्यांकन है जिसमें समाज के साथ-साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिकता, विधि, कृषि, गाँव-शहर, महिला-पुरुष और दलित वर्ग-उच्च वर्ग, पाश्चात्यीकरण-भारतीयता, औद्योगिकीकरण, तकनीकी, विज्ञान आदि-आदि क्षेत्र सम्मलित होते हैं। व्यक्ति सामाजिक प्राणी होने के नाते जन्म पूर्व (गर्भ में) और मृत्यु उपरांत (विचारधारा रूप) में अपनी अनेकों भूमिकाओं को अदा करता है। मनुष्य व्यवहार समाज में ही बनता-बिगड़ता है। समाज में ही वह उन्नति-अवन्ती को देखता-भोगता है । हर मनुष्य या प्रत्येक जीव अपने अस्तित्व के लिए संघर्षशील रहता है। यही संघर्षशीलता ही सामाजिकता का चक्कर है। जिसमें मनुष्य अन्यों के

सम्पर्क में आता है और सम्बन्ध स्थापित करता है। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है और उसका मुखिया परिवार-मुखिया कहलाता है। परिवार के मुखिया से ही समाज दर्शन आरम्भ होता है। वह मुखिया समाज में जाता-आता है और सामाजिक गतिविधियों में अपनी भूमिका अदा करता है। मुखिया के पश्चात भाईचारा आरम्भ होता है और भाईचारा कई जातियों, वर्गों, सम्प्रदायों और कुलों आदि में सामाजिक-नियमों के रूप में विभाजित होते है। यही चरण गाँव से ग्राम सभा, पंचायत, ब्लाक, जिला, राज्य और देश की तमाम सीमाओं तक निरंतर गतिमान होते हैं और जो-जो पड़ाव हमें इन सबके मध्य दिखाई देते है वही सामाजिक दर्शन कहलाते है। इस यात्रा के मध्य गाँव-शहर, जाति-धर्म, स्त्री-पुरुष, वर्गों और वर्णों, पाश्चात्य-देशी विचारधारा, ज्ञान-अज्ञान, अमीरी-गरीबी, किसान-मजदूर, वन्य-जीव-जंतु सभी समाज-दर्शन के वृत्त में आते हैं।

हिंदी फिल्म 'मदर इंडिया' जो अंग्रेजी नाम के स्वरुप सम्बन्ध जान पड़ता है उसमें देशी शब्द 'भारत माता' का अनुवाद है। फिल्म निर्माता का इस फिल्म में किसानी जीवन में एक नारी पात्र राधा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश को दर्शाने का ही कार्य किया है। यह फिल्म 1957 देश आज़ादी के 10 वर्ष उपरांत है तथा इसमें आज़ादी से पूर्व ग्रामीण परिवेश एवं ग्रामीण जन-जीवन पर ही केन्द्रित है। "जब किसी 'बाहरी' व्यक्ति को हिन्दी सिनेमा से परिचित कराया जा रहा हो तो उसे जिन फिल्मों को देखने की सलाह दी जाती है, उनमें 'मदर इंडिया' (1957) अग्रणी है। कहा जाता है कि अगर आपने 'मदर इंडिया' नहीं देखी तो हिन्दी फिल्में नहीं देखीं। आज पुरानी फिल्मों के रीमेक बनाने की होड़ लगी हुई है और ये रीमेक पुरानी फिल्मों के आसपास भी नहीं फटक पाते। सच पूछा जाए तो भारतीय सिनेमा में संभवतः एक ही महान रीमेक बनी है और वह है मेहबूब खान की 'मदर इंडिया'। यह मेहबूब की ही 1940 में आई फिल्म 'औरत' की रीमेक थी। आज यदि किसी हिन्दी रीमेक को 'महान' की संज्ञा दी जा सकती है तो वह 'मदर इंडिया' ही है। यह दस्तावेज है मनुष्य, खास तौर पर भारतीय ग्रामीण स्त्री की जिजीविषा का। एक कैन्वस है, जिस पर ठेठ हिन्दुस्तानी जीवन की पेंटिंग रची गई है। एक महाकाव्य है, जो समय की सीमाओं से परे हो चुका है"[1]

[1] http://hindi.webdunia.com/article/bollywood-glamour-world/%E0%A4%AE%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%87%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%B9%E0%A4%B2-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A4%97%E0%A4%BF%E0%A4%B8-112021400218_1.htm

' मदर इंडिया' फिल्म का आरम्भ एक खेत में जलते आधुनिक वहां ट्रेक्टर, क्रेन, बना हुआ बाँध के उद्घाटन पर बड़े-बड़े नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के मध्य आरम्भ होती है। जिसमें राधा उर्फ़ नरगिस बुजुर्ग अवस्था लगभग 70 के करीब से मुहरत रूप में करवाने के आग्रह को बुजुर्ग महिला कहीं खो जाती है वही फिल्म का पहला मोड़ आरम्भ होता है और हम मदर इंडिया में फिल्म में समाज-दर्शन के लिए प्रवेश करते है।

राधा (मदर इंडिया में जो सबसे अधिक भूमिका निभाती है) का विवाह शामू से होता और भारतीय हिन्दू रीति-रिवाज से विवाह सम्पन्न होता और पत्नी का गृह-प्रवेश होता है। अगले दिन राधा काम करते हुए कुछ बुजुर्ग महिलाओं से बहु की सुन्दरता और विवाह ऋण लेकर लग्न (विवाह) होने की बात सुनती है तो उसकी सास बीच में आकर उन महिलाओं पर डांट लगाते हुए कहती है कि, "कौन नहीं पैसे उठाकर विवाह करता, उतर जाएगा एक दिन ?" राधा को भागवान मानकर ऋण उतरने की अभिलाषा की जाती है। राधा शामू संग विवाह के शुरुआती हसीन-मधुमय दिनों का आनंद लेती है। राधा चक्की से गेहूं पिस आटा निकलती है, पशुओं की सयानी तथा दूध निकालने जैसा कार्य भी करती है तो शामू नई-नवेली बहु के अधिक कार्य करने पर मना करता है। भारतीय परिवारों में पति-पत्नी के सम्बन्ध के मध्य बड़े-बुजुर्गों का लाज को दिखाया गया। शामू एक स्थान पर एक व्यक्तव्य में कहता है कि. "घर में माँ का डर, बाहर दुनियां का डर" प्रेम के लिए समय ही नहीं मिलता। शामू किसान फसल प्राप्ति हेतु भगवान भरोसे (वर्षा होने) पर रहता है और पत्नी से वर्ष में चार बच्चों की कामना करता है।

समयानुसार राधा परिवार मेंपहले बेटे को जन्म देती तथा शामू अत्यधिक ख़ुशी में अपनी हुई फ़सल से दाने-दान करता है तो सुखी लाला उसका विरोध करता है और कहता है इसमें मेरे भी हिस्से है। शामू पूछता है कितने हिस्से है ? तो लाला 3 हिस्से अपने और 1 हिस्सा शामू के बताने पर शामू की माँ झगड़ने लग जाती है कि लाला तू उल्टा क्यों बोल रहा है ? यह बात अब पंचायत के सम्मुख पहुँचती है लाला करारनामा लाकर पंचों को अपने संग मिला लिखे हुए को मनवा लेता है। राधा अपने पति के लग्न का ऋण जल्दी उतारने हेतु काम में जुट जाती है। अब राधा-शामू के परिवार में एक छोटा लड़का और जन्म ले लेता है जिसका नाम बिरजू है।

लाला हर साल की तरह फ़सल से अपने मूल के सूत का हिस्सा लेने आता है तो बिरजू बालक रूप में लाला को धमकाता है तो कि, 'तुमने कौन सा हल चलाये ?' जो हिस्सा लेने आ

गये। बिरजू लाला की साढ़े पांच रूपये की छतरी छीनकर तोड़ देता है तो लाला उसे भी ब्याज में जोड़ने की बात पर दादी लाला को टूटी छतरी के पूरे पांच रूपये जोड़ने का विरोध करती है। तभी राधा-शामू-रामू-बिरजू एक पीतल की बर्तन में सांझा भोजन करते है। वात्सल्य अति-दर्शनीय हो जाता है। रामू-बिरजू को स्कूल भेजते है तो मास्टर लीलाती प्रसाद बच्चों को पिटते देख बिरजू उसकी आँख में गुलेल से पत्थर मारकर स्कूल से भाग जाता है। फिर कभी बिरजू दोबारा स्कूल नहीं जाता और रामू भी स्कूल में नहीं पढ़ पाता। पारिवारिक स्थिति के कारण दोनों भाइयों की शिक्षा अधूरी रहती है। मास्टर को गुलेल मारने पर बिरजू की दादी बिरजू को रस्सी से बाँध देती है उसकी माँ राधा चुपके से रस्सी खोल बिरजू को खाना खिलाती है। राधा अपनी सास के पांव दबाती है। बिरजू शरारती होता चला जाता है लाला की लड़की से चना-गुना चुराकर भाग जाता है।

इधर राधा के घर गरीबी होने के कारण दादी लाला सुखी में एक मण ज्वारी मांगने जाती है तो लाला घर से बहु के जेवर लाकर गिरवी रखने को कहता है। इतना कहने पर दादी लाल होती है। लाला चालाकी से घर में पीतल के बर्तनों के बारे कहता है तो दादी जलते-मन से घर से बर्तन लेने जाती है। छोटा लड़का बिरजू अपनी थाली के लिए रोता है और कहता है कि यह मेरे प्यारे बर्तन मैं नहीं दूंगा। बच्चे की अधिक नहीं चल पाती है। आखिकार बर्तन लाला के घर चले जाते है और एक मण ज्वारी उधारी के रूप में। भूख और बर्तनों के समझौता दिखाया जाता है।

हर साल फसल बराबर होने पर भी ब्याज वहीं खड़ा रहता है। राधा पीतल के बर्तन गिरवी रख मिटटी-के-बर्तन में अब खाना पकाते और खाते। राधा तभी अपने खेतों के समीप पड़ी 5 एकड़ बंजर पत्थरों भरी भूमि पर फसल की योजना बनाते है। शामू मना करता है पर राधा उसे मजबूर कर मना लेती है। बंजर भूमि में बैलों को लगाया जाता है जिसमें से एक बैल मर जाता है तो पुन: लाला से ऋण हेतु जाना पड़ता है। लाला बतमीजी से बोलता है तो शामू उसका गला पकड़ लेता है और लाला अपने बदला लेने का प्रण लेता है कि, “बदला न लिया तो भंगी का कहना।” शामू लाला के यहाँ चन्ना खाने से मना करता है जबकि राधा बच्चों की भूख मिटाने की कोशिश करती है तो शामू उसे पीट देता है। क्योंकि वह ज्वारी दादी अपने बर्तन गिरवी रख लायी थी। सारा खाना जमीन पर गिर जाता है। छोटा बालक बिरजू आकर माँ को टूटे मिटटी के बर्तन में खाना परोसता है। घर से राधा अपने संदूक से अपने जेवर बेचकर बैल लाने के लिए शामू से कहती है और दोबारा बंजर भूमि का काम शुरू हो जाता है। पत्थरों तले

हादसे में शामू के दोनों हाथ आने से ख़राब हो जाते है। राधा भी शामू और अपना दोनों का कार्यभार संभालती है। लाला शामू से अगले वर्ष व्याज उगाही के समय ब्याज-रूप में उसके दोनों बैल छीनकर ले जाता है और शामू देखता रहता जाता है तथा लाला शामू के अपाहिज ताने पर आधी रात को सोती हुई राधा का सिन्दूर मिटा मिटाकर, चपल-डालकर, मुंह से दरवाजे की कुण्डी खोलकर अँधेरे-में कहीं बहुत दूर निकल जाता है। राधा विलाप में दादी को उठाती है और दोनों सास-बहु रोने लगती है। छोटा लड़का कहता है कि बापू गये तो क्या हुआ ? जाने दो हम तो है। राधा का विलाप अति-विधवा-विलाप भरा हो जाता है।

कुछ दिन पश्चात दादी अचानक गिर पड़ती है बिरजू माँ को बुलाकर कहता है तो राधा उसे मृत देखकर आहत होती है। ब्राह्मणों को मृत-भोज कराया जाता है। पड़ोसन इस मृत्यु-भोज को दुत्कारती है। तभी कुछ बाद तीसरा बच्चा जन्म लेता और लाला दो बैल लेकर आता है और 20 बिगे जमीन में देने के बात रखता है तथा उसके लिए राधा को अपनाने की बात करता है। राधा पर बुरी नजर रखता है। बिरजू अपने बैल को देखकर बैल को पकड़ लेता है तो राधा बैल को जोड़ने को कहती है तथा राधा पुन: किसानी जीवन पर लौट आती है। राधा अपने नारी जीवन पर अडिग रहती है और मुश्किल में भी हिम्मत नहीं हारती। अपने स्वाभिमान के लिए वह ईश्वर पर निर्भर रहती है। उसे विश्ववास होता है कि एक दिन लाला का सारा मूल और ब्याज दोनों उतार देगी।

फसल कटने वाली होती है तभी एक भयानक तूफ़ानी वर्षा से बाढ़ आ जाती है जिसमें सारी फसल नष्ट होती है, मकान गिर जाते है, सब सामान बह जाता है और घर में बांस के सहारे जबतक पानी 5 फिट से नीचे नहीं होता राधा सारी रात उस बांस को कंधे पर रखती है। पानी पर सांप भी आ जाता है जिसे राधा हाथ से पकड़कर फेंक देती है। बाढ़ में राधा अपने सबसे छोटे शिशु बच्चे को खो देती है। तभी लाला आता है और राधा पर बच्चे को मारने का ताना मारता है। लाला बच्चों को खाने के लिए चन्ने का ऑफर करता है तो छोटा बेटा बिरजू चनों को जल्द से मुंह में डाल लेता है और तब मुंह से थूक देता है जब माँ कहती है कि, “बेटा तुझे माँ चाहिए या चन्ने।” बिरजू बेहोश होकर गिर पड़ता है तो राधा खुद पर पश्चाताप करती है कि मेरी वजह से बच्चे की ऐसी हालत हुयी। राधा लाला के घर जाती है और कहती है कि, “मेरे बच्चे भूखे है, मुझे खाना दे लाला।” लाला राधा को कमरे में ले जाता है। लाला राधा का बलात्कार करने की कोशिश करता है और राधा अपना जमीर फिर से प्राप्त कर लेती तथा लाला को पीट डालती है. लाला से पीछा

छुड़ाकर वापिस अपने बच्चों के पास आकर उसे एक शक्करगंदी मिल जाती है. उसे ही खाकर सब भूख मिटाते है.

गाँव में बाढ़ आ जाती है और उसके पश्चात ग्रामीण गाँव से पलायन करते है जबकि राधा गाँव इस बात नहीं छोड़ती कि यदि उनके पति पीछे से आ गए तो.. इसी इंतजार में गाँव नहीं छोड़ती. राधा अपने पृथ्वी-माँ प्रेम को दर्शाती है तो एक दिन गाँव वाले भी वापिस आ जाते है तथा गाँव फिर से बस जाते हैं. राधा अपने बच्चों के बड़े होने से कुछ आशावादी अधिक हो जाती है और थोड़ा सुख महसूस करती है. ग्रामीण अब गाँव में बैलों से सामूहिक जुताई करना शुरू कर देते है और फ़सल को तैयार करते है.

लाला हर साल की तरह अपना हिसाब उठाकर अपना ब्याज हिस्सा लेने आता है तो जवान बिरजू गेहूं की ढेरी पर कटार लेकर लेटा होता है और लाला को गेहूं न उठाने की घमकी देता है. बात झगड़े में तब्दील हो जाती है तथा लाला अपना ब्याज के कागज बिरजू को दिखाते है और गाँव वालों को पढ़ने को कहता है तो सबको अनपढ़ जानकार बिरजू दुखी होता है तथा वहां से जाकर वह एक स्कूल मास्टर की लड़की रूपा की कक्षा में जाकर बालकों के बीच बैठकर अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि ऊँचा-ऊँचा बोलता है. रूपा बिरजू से प्रेम करती है और कहती है कि 3 साल बाद क्यों आया, आज? बिरजू कहता है कि समय ही नहीं मिला. तब रूपा बिरजू को 25 बिगे जमीन पर सूत का ब्याज-चक्र समझाती है.

बिरजू रामू-चम्पा की विवाह-कुंडली की चर्चा करता है. चम्पा दूसरे गाँव से अपनी मौसी के पास रहती है से विवाह की बात होकर रिश्ता पक्का हो जाता है जबकि बिरजू के रिश्ते में दिक्कत आती है. बिरजू लाला सुखी की कपास चुराकर दूसरे साहूकार को बेच देता है और उसके बदले 2 कंगन, 25 रूपये नकद आदि लेकर आता है तथा कंगन माँ पहना देता है. तभी लाला आ जाता है और सारी सच्चाई बयाँ करता है तो माँ बिरजू को पिटती है. लाला पुलिस में जाने की बात करता है तो बिरजू कहता है जा-जाकर रपट कर दे; कौन डरता है ? लाला अपनी कपास के बदले आये दोनों कंगनों को उतरवा लेता है और बिरजू 25 रूपये उसके मुंह पर मारता है. गरीब वर्ग चोरी जैसी गंदी हरकतों से डरता दिखाया गया है.

बिरजू की कुछ हरकते लड़कियों को झेड़ने की प्रवृति लाला की लड़की चंद्रा निर्माण करवाती है. बिरजू उसे समझाता है तो वह और उसे चिढ़ाती है मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से बिरजू और बिगड़ता जाता है. जबकि इसके पीछे उस लड़की का हाथ होता है. एक दिन सब लड़कियां चन्द्रा के नेत्रित्व में आकर राधा के पास आकर जानबूझकर रोने लगती है और बिरजू पर तरह-तरह के आरोप लगाकर उसकी पिटाई तक करवाना चाहती है. पुत्र-मोह त्याग राधा

गाँव की लड़कियों को झेड़ने को लेकर बहुत नाराज होती है तथा उस दिन काफी दुखी भी रहती है. माँ बिरजू के चंद्रा को झेड़ने और रामू के चंपा प्रेम से तंग आकर रात को दोनों के पाँव बांधकर साथ सोती है. फिर भी रामू चंपा से मिलने आधी-रात को भी जाता है और चंपा के मामा द्वारा पकड़ा जाता है.

समाज में बद-से-बुरी बदनामी को मानते है. राधा जब बिरजू की शादी की बात रूपा के पिता से करने जाती है तो उसका पिता बिरजू के बिगड़ते चरित्र के कारण मना कर देता है और माँ लड़की वालों के द्वार से मुंह काला करवाकर आती है तथा बिरजू को आकर धमकाती है. चंद्रा-बिरजू यह बात सुनकर बहुत दुखी होते है और अपने प्रेम को बीच में ही रोकने को कहते है तथा कसमें वादे खाते है. चंद्रा कहती है तुम्हारी तो शादी हो चुकी है 'अपने खेतों से' उन्हें ही छुड़वा लो वही काफी है. मैं कहीं और शादी कर लूँगी. इधर रामू का विवाह सम्पन्न होता है.

बिरजू अपने प्रेम-मोह का छोड़ कंचों-खेल में जुआ ग्रामीणों के खेलता है. बिरजू और चंपा के मध्य देवर-भाभी-प्रेम संवाद (देवर के होते हुए भाभी पानी लाएगी) होने से बिरजू पानी के तीन मटके भरकर कुएं से लेकर आते हुए रूपा उसके सभी मटके तोड़ देती है. चंपा एक बच्चे को जन्म देती है तो बिरजू उत्सुकता से पूछता है क्या हुआ ? लड़का या लड़की ..?? जवाब में लड़का सुनकर अत्यधिक ख़ुशी होती है. समाज में लड़कियों के जन्म पर इतनी ख़ुशी नहीं मनाई जाती जितनी लड़की के होने पर. गाँव में संगीत-नृत्य का आयोजन होता है तथा लड़की-लड़का बन मनोरंजन करता है.

गाँव में होली वार्षिक मेला होता है जिसमें सब गाँववासी हिस्सा लेते है और रूपा मेले में बिरजू को उसके माँ के कंगन दिखाकर चिढ़ाती है तो बिरजू उसे बाहों में जोर-से-कस लेता है जिससे सभी ग्रामीण लोग उस पर प्रहार-पर-प्रहार करते है तथा उसे घायल कर देते है. लाला अपनी बेटी की इज्जत पर हाथ डालने पर कहता है कि मैंने कभी किसी औरत की तरफ हाथ नहीं उठाया तो एक ग्रामीण कहती है लाला रहने दे; अपनी बात मत खुलवा. तभी लाला कहता है "लो महिलाएं अब चौपाल में भी बोलने लगे सही नहीं". तब रामू बताता है लाला की लड़की रूपा भी सही नहीं है, वह ही बिरजू को झेड़ती है यह बात सुनकर लाला उसके ब्याह की बात कहते है रूपा बोलती है, "बाबा अभी तो मैं छोटी हूँ" मेरी शादी इतनी जल्दी मत करो.

बिरजू मार खाकर गुस्से में रात को एक बन्दूकधारी की बंदूक चुरा लाता है और जाकर अपने घर के समीप घास-पूस की ढेरी में छिपाने लगता है तो उसकी माँ राधा देख लेती तथा बिरजू को ऐसा करने से रोकती है. माँ बिरजू को समझाती है तो तब भी बिरजू नहीं समझता और अपने जमीन छुड़ाने की बात कहता है. माँ कहती है बेटा हम अपना जीवन-जी लेंगे देखों

आज हमारे पास पांच बिगे जमीन, खाना है, हल है और बैल भी है. हम भगवान् भरोसे जीवन अपना जीवन जी लेंगे.

इसी बात के दौरान बिरजू माँ से झगड़ा करता है. अब बिरजू वह बिरजू नहीं रहता जाता जब उसकी माँ ने लाला के 'चन्ने और माँ'में से एक को चुनने को कहा तो बिरजू 'माँ' को चुनता है. रामू झगड़े को सुनकर बाहर आकर देखता है तो रामू-बिरजू में झगड़ा हो जाता है और बिरजू रामू के सिर पर कुल्हाड़ी मार देते है रामू चक्कर खाकर गिर जाता है. बिरजू बन्दूक लेकर लाला के घर घुसता है और लाला की खूब धुनाई करता है. लाला छत मार्ग से गाँव में शोर मचाता है तथा अपनी जान बचाता है. लाला अब लोगों को इक्कठा कर लेता है बिरजू भागता-भागता खेत-खलिहान में छुप जाता है. लाला पूरे खेतों में आग लगवा देता है ताकि बिरजू उसमें जलकर मर जाए. बिरजू की माँ आग के गोलों के बीच चक्कर खाकर बेहोश होकर गिर जाती है तो बिरजू कहीं से आकर उसे (माँ) उठाकर नदी के किनारे ले जाता है. राधा माँ बिरजू बेटे को खूब समझाती है तथा खूब गुहार लगाती है परन्तु बिरजू जंगल में कहीं दूर निकल जाता है.

बिरजू के वियोग में राधा अपना लाल को, दिल के टुकड़े को, मनाने की बात करती है. वह उसके लिए पागल-सी हो जाती है और अपनी गोद को खाली महसूस करती है. वह एक बार अपने बेटे बिरजू को दूल्हे के रूप में देखना चाहती है. पर इन सब फरियादों के बाद भी बिरजू जंगल में कहीं दूर चला जाता है और डाकुओं का सरगना बन जाता है तथा लाला से अपना बदला लेने को बेताब रहता है.

लाला अपने बेटी रूपा की शादी करने वाला होता है कि खबर जानकर बिरजू उसकी बेटी को उठाने की धमकी भरा संदेश प्रेषित करवा देता है. जिससे लाला जल्द अपनी रक्षा के लिए उसी राधा के पास आता है और जिसकी इज्जत लूटने का लाला खुद प्रयास करता है; राधा से अपनी बेटी की रक्षा का वचन लेता है. राधा गाँव की बेटी समझकर लाला को उसकी बेटी की रक्षा का वचन देती है.

उधर चन्द्रा का विवाह होता है और बिरजू डोली मार्ग में मध्य आकर अपनी प्रेमिका का दीदार करता है और चला जाता है. प्रेमिका कुछ कह नहीं पाती और न बिरजू कुछ कह पता है. क्योंकि अब चन्द्रा किसी और की हो चुकी है. इधर रूपा का विवाह बंदूकों के साये में होता है और बिरजू अपने दल-बल के साथ दूर से ही गोलियों का कहर बरसाता आता है तो रस्ते में माँ को देखर वापिस आता है; माँ खूब रोकती है पर बिरजू का घोड़ा आगे मंडप की तरफ बढ़ जाता है. माँ काफी पीछे रह जाती है. तबतक बिरजू लाला को अब बड़े-भयानक डाकू लिबाज़ में मिलता है तथा लाला की तिजौरी चाबी लेकर उसमें से माँ के कंगन और सभी गाँव वालों के मूल

एवं ब्याज के दस्तावेजों को भी निकालकर आग लगा देता है. रामू वहां माँ के वचन को निभाने के लिए बिरजू से झगड़ा करता है और अपने डाकू सेवकदारों को बीच में न आने को कहता है. बिरजू राजू को मार-गिराकर रूपा के पीछे भाग उसे उठा लेता है तथा अपने घोड़े पर बैठा लेता है. तबतक बिरजू के माँ उसके समीप बन्दूक लेकर पहुँच जाती है... तथा बेटे से कहती है बेटा इसे छोड़ दे, नहीं तो मैं गोली मार दूंगी... बेटा कहता है माँ बेटे को नहीं मार सकती...तब माँ कहती है गाँव की इज्जत के लिए माँ ऐसा भी कर सकती... बिरजू अनदेखा कर आगे बढ़ निकलता है जैसे ही घोड़ा मोड़ लेने वाला होता है एक गोली... धाय- करके निकलती और बिरजू घोड़े ने गिर जाता है. माँ की ममता फिर जागती है और भागकर बिरजू को गले से लगाती है तबतक काफी देर हो चुकी होती है और बिरजू दुनिया छोड़कर जा चुका होता है ...

अगले क्षण बांध पर राधा की आँख खुलती है और अपने आपको मुख्य-अतिथि रूप में वहीँ उन गाँव के लोगों के बीच पाती है.. बांध का उद्घाटन होता और पानी खेतों पर चला जाता है..

(इस प्रकार इस कथा का अंत होता है)

भारतीय हिंदी फिल्म मदर इंडिया में समाज दर्शन

भारतीय समाज में हिंदी फिल्मों में समाज के बिना कोई भी कल्पना नहीं की जा सकती. मदर इंडिया फिल्म में भारतीय समाज के अंतर्गत महबूब खान फिल्म निर्माता ने ग्रामीण जनजीवन, नारी चित्रण, उच्च-निम्न वर्ग, पुरुष-स्त्री, सहित भारतीय संस्कृति को भी स्थान दिया है. भारतीय समाज में यह फिल्म तब 1957 ई में आई; जब देश को आज़ाद हुए 10 वर्ष भी सही से नहीं हुए थे. भारतीय समाज में इस फिल्म का समाज दर्शन के अंतर्गत अत्यधिक सामाजिक पक्ष के दर्शन हुए तथा उसमें भी विशेषकर ग्रामीण जन जीवन के एक नव-विवाहिता से बनी विधवा जीवन जीती महिला-किसान के जनजीवन का अंकन है . उपरोक्त फिल्म में समाज के निम्नलिखित दर्शनों पर प्रकाश डाला.

राजनीतिक दर्शन से यह फिल्म अधिक दर्शन नहीं कराती. सुखी लाला भोले-भाले अशिक्षित लोगों से उनकी अशिक्षा का फायदा उठाकर सभी ग्रामीण लोगों से उनकी जमीन उधार, गिरवी रखवा लेता है तथा बदले में मूल और उससे जुडी ...राशि को वसूल करने के लिए गाँव की पंचायत के सदस्यों पंचों को अपने साथ मिला लेता है. वहां पंचायती राजनीति देखने को मिलती है. ग्रामीण लोग पंचों को परमेश्वर मानते है तथा उनका कहा नहीं टालते. पंचायत में

महिलाओं के बोलने (अभिव्यक्ति) पर पाबंधियां लगी होती है. पंचों की सर्वत्र मिलीभगत दिखाई देती है. 'जो लिखा है, देना होगा' सिद्धांत पंचायत द्वारा अपनाया जाता है चाहे वह नैतिक रूप से अनैतिक ही क्यों न हो ? गाँव में पढ़े-लिखे पञ्च-सरपंच आदि नहीं होते. वहां महिलाओं की शिक्षा का सवाल तो दूर-दूर से भी बहुत-दूर है. महिलाओं के अधिकारों के प्रति कोई भी ऐसी समिति या संस्था भी नहीं होती.

सामाजिक दर्शन सम्बन्धी फिल्म के भीतर और बाहर दोनों समाज के दर्शन होते हैं. हमें सामाजिक दर्शन के रूप में भारत देश में गरीबी के दर्शन होते है. फिर भी विवाह को अत्यंत आवश्यक मानकर ऋण लेते समाज को देखते है. जो ऋण लिया जाता है वहां अशिक्षा मध्य खड़ी हो जाती है और शिक्षित व्यक्ति लाला अपनी शिक्षा का गलत फायदा उठाकर गरीब जनता को नाजायज ऋण लगाता है तथा हर फसल पर अपना हिस्सा लेने आ जाता है. गरीब किसान अपनी माँ, बाप, दादी और अन्य को ऋण के बोझ के कारण उनका शारीरिक और मानसिक विकास नहीं कर पाता है. किसान भूख से मरता है और साहूकार उनका अधिक शोषण करता; निरंतर ऐसा चलता रहता है. यहीं स्थिति गाँव के सभी किसानों की बनी हुई है. सभी लाला के कर्ज के तले दबे हुए है. लाला से तंग आकर एक सच्चा किसान डाकू तक बन जाता है और अपना बदला लेता है. परन्तु उससे बड़ी सच्ची-महिला-किसान अपने डाकू बेटे को गोली तक मार डालती है. गाँव की इज्जत के कारण.

समाज में नारी-चित्रण, नारी-विमर्श एवं नारी संघर्ष की गाथा के दर्शन भी होते है. राधा नई-नवेली दुल्हन रूप में शामू के घर आती है. घर आते ही उसे पति के लग्न-ऋण का पता चलता है और बंजर भूमि पर खेती करने का साहस अपने पति संग करती है. जिसमें उसका एक बैल मरने से वह और गरीब हो जाते है और घर में खाने को कुछ भी नहीं होता. बालक भूखे मरते देख घर के पीतल के बर्तन बेचकर वह मिटटी के बर्तनों में भोजन करते है और पति के दोनों हाथ ख़राब हो जाने पर अपने पति, बच्चों और दादी की भी सेवा करती है. शामू एक रात राधा, अपने बच्चों और अपनी माँ को छोड़कर चला जाता है तब भी वह हिम्मत नहीं हारती और उसका इंतजार करती रहती है. तभी कुछ दिनों पश्चात उसकी सास गुजर जाती है और वह अपने बच्चों संग अकेली सी हो जाती है. वह (राधा) अपने बच्चों को जवान करती है और अपनी सास का लिया कर्ज उतारती रहती है परन्तु उसका मूल वहीं खड़ा रहता है. मूल खड़ा रहना उनके घर की आर्थिक स्थिति बिगाड़ने के लिए काफी होती है. बच्चे जवान हो जाते है और उधर पति की याद राधा को आती रहती है. राधा को बच्चों के विवाह की चिंता होती है जिसमें से एक रामू का विवाह हो जाता है जबकि बिरजू का विवाह नहीं हो पाता को लेकर दुखी होती है. जिसमें माँ के ममत्व, त्याग, तपस्या, संघर्षशील, कर्तव्यनिष्ठ, सत्यवादी, स्वाभिमानी, आदर्श

पत्नी-माँ-बेटी-काकी आदि भूमिकाओं के दर्शन होते हैं. नारी अधिकतर भाग्य भरोसे देखी जाती है. चूल्हें पर खाना पकाना, खेतों में बैल चलाना, कुएं से पेय-जल लाना, जन्म देने की जिम्मेवारी, बच्चों को कहानी सुनाना, पति की चिंता में शामिल होना, सास की सेवा, समय आपने अपने अपने जेवर देना, अपाहिज पति की सेवा, बच्चों का पालन-पोषण, गर्भवती होने पर भी भूख से समझौता न करना, जीवन को एक संघर्ष मानकर चलना, बाढ़ में संरक्षिका बनना, गाँव के लोगों को पलायन से रोकना, अपनी इज्जत की रक्षा करना, देवी पर सवाल, ब्राह्मणवाद पर तंज, बेटों के लिए लड़की का हाथ मांगने जाना, चोरी वस्तु से परहेज, बद से डरती औरत, भाभा-देवर प्रेम,समाज में नारी को कम समान, अवैध बन्दूक का विरोध, पुत्र-प्रेम में बीमार होना, आदि आदि नारी चित्रण को दर्शाते हैं.

सांस्कृतिक दर्शन सम्बन्धी ग्रामीण समाज में धरती माता के रूप में कृषि की पूजा के दर्शन होते है जो भगवान् की आस्था संग है. बांध के लिए मुहरत को शुभ मानते है. समाज में परिवार सबसे छोटी इकाई को जोड़ने के लिए विवाह नियम है. जिसमें हिन्दू रीति-रिवाज के दर्शन होते हैं. लोक-गीतों को विवाह के समय गाया जाता है. नई दुल्हन से अधिक काम नहीं कराया जाता. वैवाहिक जीवन में रोमांस के लिए 'घर में माँ और बाहर दुनियां का डर' दीखता है. हर व्यक्ति भगवान् काम करने वाली कर्मठ व्यक्ति की कामना करता है. पत्नी अपना सबकुछ अपने पति को सौंप देती है. पति भी पत्नी से 4 वर्ष में 4 बच्चों की कामना रखते है. समाज में बेटे के जन्म पर अधिक ख़ुशी मनाई जाती है और अन्नदान किया जाता है. गाँव में पुलिस का आना अशुभ माना जाता है. जब लाला सुखी अपने रुपयों को जबरदस्ती मनवाने की धमकी देता है तो सब पञ्च पुलिस को अपने गांवे में अशुभ का संकेत देते है. सास-बहु और दादी-पोता प्रेम समाज में देखने को मिलता है. इन कहानियों में काल्पनिकता होती है जैसे- सात दूम वाला चूहा. समाज में जातिवाद के भी दर्शन होते है जब लाला अपने अंहकार में आकर कहता है कि, 'यदि ऐसा न हुआ तो- सुखी लाला नहीं भंगी कहना'. जिससे समाज में जातिवाद के भी दर्शन होते है. मांग मिटाना अशुभ माना जाता है जब शामू राधा की रात में मांग मिटाकर चला जाता है तो लोग उसे मरा हुआ ही मानकर चलते है. समाज में विधवा-विरह को कोई अथाह सीमा नहीं होती. उसका दर्द उसके आलावा कोई समझने वाला नहीं होता. राधा 40 बरस विधवा बन संघर्ष करती नज़र आती है. ब्राह्मणों को मरे पर खाना खिलाना समाज में अच्छा माना जाता है जबकि कुछ लोग उसका विरोध करते कहते है कि, "मरे की आत्मा पर खाये, जिन्दा आत्मा को जीने न दिये जाये". एक स्थान पर ज्योतिराव फुले लिखते है कि, "ब्राहमण-पंडा-पुरोहित लोग अपना पेट पालने के लिए, अपने पाखंडी ग्रंथों द्वारा, जगह-जगह, बार-बार, अज्ञानी शूद्रों को उपदेश देते रहे, जिसकी वजह से उनक मन-मस्तिष्क में ब्राह्मणों के प्रति पूज्यभाव पैदा होता रहा."[i] गाँवों में बाढ़ अक्सर आती रहती है जिसमें राधा का सारा घर तबाह हो जाता है और फिल्म के अंत में

एक बांध का निर्माण होता है. देवियों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को दर्शाया गया है. देवी से अपने सुहाग की कामना की जाती है. विवाह के लिए पहले विवाह-कुंडली पंडित से मिलाई जाती है. गाँव की बेटी की इज्जत को सबसे ऊपर माना जाता है. ग्रामीण लोग चोरी सहन कर सकते है परन्तु छोरी छेड़ना बर्दास्त नहीं कर सकते. तब सारा गाँव एक हो जाता है ऐसे व्यक्ति के खिलाफ़. समाज में कंचे-से-जुए वाला खेल खेला जाता है. ग्रामीण मनोरंजन हेतु नृत्य भी आयोजित करते है जिसमें दो-लड़कियों एक-लकड़े और दूसरी एक-लड़की की भूमिका में प्रेम-प्रसंग का आयोजन गीतों के माध्यम से करते है. वार्षिक होली के त्यौहार पर सभी ग्रामीण लोग-लुगाई मिलजुलकर होली खेलते है भारतीय संस्कृति की पहचान को दर्शाते है.

आर्थिक दर्शन सम्बन्धी फिल्म में पाते है कि भारत के अधिकतम गाँव खेती पर निर्भर है. गाँव में बाढ़ अक्सर आती रहती है जिससे फसल और किसान फसल करने वाला सबसे अधिक प्रभावित होते है. अर्थशास्त्र की दृष्टि से कोई भी व्यक्ति अकेले कुछ नहीं कर सकता और उसे किसी अन्य संसाधनों की आवश्यकता जैसे- बीज, बैल, धन, खाने को अन्न आदि की आवश्यकता पड़ती है तथा वह गाँव के साहूकार के पास होने से ग्रामीण लोग अपनी जमीन-जेवर एवं कीमती सामान को गिरवी रखते है तथा एक मूल स्थापित हो जाता है. इस मूल पर ब्याज (ऋण) भी रखा जाता है,जबतक मूल और ब्याज नहीं उतरता तबतक ब्याज चलता रहता है. जैसा की फिल्म होता है. पांच सौ रूपये रूपये के चक्कर में 20 साल ब्याज देने पर भी मूल वहीं खड़ा रहता है तथा किसान गरीब-तो साहूकार धनवान बनता जाता है. आर्थिकता की आड़ में महिलाएं अपनी अस्मित भी खोने को तैयार हो जाती है. पञ्च भी धनवान की तरफदारी करते है. लिखे को ही सही माना जाता है. आर्थिकता के कारण लोग अनपढ़ अधिक होते है. इस प्रकार सारा अर्थशास्त्र कृषि और ब्याज के मध्य भी बनकर हमारे सामने आता है. तंग किसान हारकर डाकू तक बन जाते है और साहूकारों से अपना बदला भी लेते है. आदि आदि. दरअसल इस फिल्म में जो संघर्ष चल रहा है आर्थिक लड़ाई हेतु ही चल रहा होता है.

अन्य समाज दर्शन में हम स्वास्थ्य एवं चिकित्सा दर्शन सम्बन्धी बीमारी की व्यवस्था से निपटने के लिए कोई चिकित्सा का प्रबंध समाज में नहीं होता. लोग जैसे-तैसे अपने-आप अपनी भूख आदि मिटाकर ठीक हो जाते है. लोग अक्सर भूख के कारण ही बीमार होते थे और भूख मिटते ही वे स्वस्थ हो जाते थे. उन्हें फैशन का शौक बिलकुल नहीं होता केवल विवाह के समय ही कुछ बन-ठनकर रहते है बाकि सारी उम्र किसान की मैली जिन्दगी में जीते है. कभी-कभी मेलों-उत्सवों में अच्छे वस्त्रों को पहनने, बैल दौड़ देखने, होली के समय, त्योहारों पर, जन्मदिन पर के रूप में दर्शन होते है. गाँव में कहीं कोई भी इलेक्ट्रिक वस्तु द्रष्टव्य नहीं होती. आज के युग

के समान तार, टेलीफोन आदि नहीं थे. हाथ से आटा पिसने वाले चक्की थी. बैलों से खेती की जुताई होती है. सामान्य जनजीवन ही अंकित होता है.

अत: इस प्रकार हम हिंदी फीचर फिल्म में समाज के सामाजिक रूप में ग्रामीण, न्याय रूप में पंचायत, आर्थिक व्यवसाय रूप में कृषि, सांस्कृतिक रूप में जनजीवन, सहित नारी के विभिन्न जन-जीवन सहित देश में व्यवस्था रहन-सहन, मत-मतान्तर, विश्वाश-अविश्वास, रीति-रिवाज, पहनावा-ओढना, खेल-जुए, प्रतियोगिता एवं मनोरंजन आदि के दर्शन करते है. सच मायने में मदर इंडिया फिल्म में भारतीय समाज का आज़ादी के पश्चात, आज़ादी के पूर्व पपृष्ठभूमि की सार्थक अंकन किया गया है. जो आने वाली फिल्मों के लिए मार्गदर्शन किया. महिला और पुरुष किसान कितना मार्मिक चित्रण हुआ है ऐसा समाज में आज के आधुनिक युग कभी भी देखने को नहीं मिलेगा. भूख मुक्ति ही जिसकी आत्मा-मुक्ति हो वहां जीवन की दार्शनिकता के आधार बिम्बों को प्रश्नचिन्ह लग जाते है, बाल मनोविज्ञान के सामाजिक दर्शन हमें दिखाई देते है. सुखी लाला चोर है कहना समाज को साहूकार वर्ग पर तंज कसना है. ब्राहमण मरे की आत्मा की खाते है और जिन्दा आत्मा को मारते है ब्राह्मणवाद पर तंज है, देवी देरी आगे इज्जत लूटेगी मूर्तिपूजा पर सामाजिक तंज है, बाढ़ के कारण खेत तबाह हो जाते है वर्तमान सरकारों पर तंज है, उसी गाँव के लाला की बेटी की इज्जत के लिए अपने बेटे को मार देती है-जिस लाला ने एक दिन उसकी ही इज्जत लूटनी चाहे ऐसी संस्कृति पर तंज है आदि आदि. साहूकार और डाकू दोनों सामाजिक चोर समझे जाते है. फिल्म निर्माता ने पशुओं में बैलों की दौड़, नदी, नालों, वनों, खेतों-खलिहानों, बंजर-भूमि, झोपड़े, बैल-गाड़ी, गड्डे, हल, पौशाकों, वस्त्रों, साज-सज्जा, भाषा, बोली, शब्दों-मुहावरों, बिम्बों आदि तमाम समाज-दर्शन को दर्शाने में अपनी और से कोई कमी नहीं छोड़ी है, फिर भी कमी रह जाती. इसके बावजूद सच्चे अर्थों में हिंदी फिल्म 'मदर इडिया' भारतीय समाज के सूक्ष्मदर्शी है.

*****

संदर्भ सूचि :-

1. https://www.youtube.com/watch?v=Vv032qeQvN0
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Mother_India
3. PHOTOhttps://www.google.co.in/search?q=mother+india+hindi+film&safe=active&tbm=isch&tbo=u&source=univ&sa=X&ved=0ahUKEwiUj-eQ2b7YAhWEu48KHbHQBRUQiR4IsgE&biw=1280&bih=614#imgrc=dwH3bUlb53MvRM:
4. गुलामगिरी, रचनाकार ज्योतिराव गोविंदराव फुले, अनुवादक डॉ. विमलकीर्ति, सम्यक प्रकाशन, पृष्ट 14, नई दिल्ली-110063

5. यूनिकॉर्न हिंदी शब्दकोश, डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला और लक्ष्मीकांत उपाध्याय, यूनिकॉर्न बुक्स प्रकाशन, अंसारी रोड दरियानगंज, नई-दिल्ली 110002

6. http://hindi.webdunia.com/article/bollywood-glamour-world/%E0%A4%AE%E0%A4%A6%E0%A4%B0-%E0%A4%87%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%B9%E0%A4%B2-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A4%97%E0%A4%BF%E0%A4%B8-112021400218_1.htm

i